प्रबन्धकारिणी कमेटी
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

अध्यक्ष : **जस्टिस नगेन्द्रकुमार जैन**
पूर्व मुख्य न्यायाधीपति, मद्रास-कर्नाटक उच्च न्यायालय
पूर्व अध्यक्ष - मानवाधिकार/लोकायुक्त, हिमाचल प्रदेश
व पूर्व अध्यक्ष - राजस्थान मानवाधिकार आयोग

उपाध्यक्ष : **श्री राजकुमार काला**, सीनियर एडवोकेट
श्री नरेन्द्रकुमार पाटनी, आई.पी.एस. (सेवानिवृत्त)

मानद मंत्री : **श्री प्रकाशचन्द्र जैन**, आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त)

संयुक्त मंत्री : **श्री पूनमचन्द्र शाह**, एडवोकेट
डॉ. हुकमचन्द सेठी, वरिष्ठ सर्जन,
अधीक्षक, भगवान महावीर कैन्सर हॉस्पिटल

कोषाध्यक्ष : **श्री महेन्द्रकुमार पाटनी**, पूर्व उपनिदेशक उद्योग विभाग

सदस्य : **श्री सुभद्रकुमार पाटनी, श्री तेजकरण डंडिया, श्री भंवरलाल अजमेरा, श्री पदमचन्द तोतूका, श्री नरेशकुमार सेठी, श्री आर. के. जैन, श्री बलभद्रकुमार जैन, श्री नवीनकुमार बज, श्री नानगराम जैन, जस्टिस मिलापचन्द जैन, डॉ. कमलचन्द सोगाणी, श्री हेमन्तकुमार सोगानी, श्री अशोक जैन, श्री शान्तिकुमार जैन, जस्टिस नरेन्द्रमोहन कासलीवाल , श्री कमलकुमार बड़जात्या, जस्टिस नरेन्द्रकुमार जैन, श्री देवेन्द्रकुमार जैन, श्री अशोक पाटनी, श्री सुधांशु कासलीवाल, श्री सुभाषचन्द जैन।**

Website : www mahaveerji.org (Online Booking)
www.shrimahaveerji.com

शौरसेनी प्राकृत भाषा के प्रसारक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी के समर्थक

आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज के ५०वें दीक्षा वर्ष (ज्ञानवर्द्धनोत्सव-वर्ष) के उपलक्ष्य में शौरसेनी प्राकृत भाषा के गाथा रत्न श्री महावीरजी तीर्थयात्रियों को समर्पित

जैनविद्या संस्थान/अपभ्रंश साहित्य अकादमी
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी
राजस्थान
Website : www.pra.jainapa.com
www apa.jainapa.com

श्वेतपिच्छाचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज

यूनेस्को द्वारा आमंत्रित सभा को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज

''प्राचीन समय में जैनाचार्यों एवं मुनियों ने प्राकृत-अपभ्रंश साहित्य को समृद्ध करने और जैनविद्या की समुन्नति में अनुपम योगदान किया है।''

राष्ट्र की प्राचीन जनभाषा शौरसेनी प्राकृत का प्रचार-प्रसार आचार्यश्री की दिव्य प्रेरणा से हो रहा है। दिगम्बर परम्परा में आचार्यश्री ऐसे दिगम्बर योगी हैं जो प्राकृत भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित हैं।

शौरसेनी प्राकृत भाषा का अपूर्व ग्रन्थ

आचार्यश्री (समय प्रमुख)

(जैनविद्या संस्थान, जयपुर से १९९७ में प्रकाशित)

''एदम्हि रदो णिच्चं, संतुट्ठो होहि णिच्चमेदम्हि।
एदेण होदि तित्तो, होहिदि तुह उत्तमं सोक्खं।।''

इस (आत्म-) ज्ञान में तू सदा लीन रह, इस ज्ञान में ही तू सदा संतुष्ट रह, इस ज्ञान से तू तृप्त हो। इससे ही तू उत्तम सुख प्राप्त करेगा।

आचार्यश्री ने प्राकृत भाषा और साहित्य एवं संस्कृति के उन्नयन के लिए अनेक द्वार खोले हैं। भारतीय संस्कृति की धरोहर प्राचीन साहित्य एवं शिलालेखों आदि में संरक्षित है। इसका बहुभाग प्राकृत भाषा में है। उसमें भी शौरसेनी प्राकृत का प्रयोग अधिक है। इसलिए शौरसेनी प्राकृत भाषा एवं इसके विशेषज्ञ विद्वानों का संरक्षण आवश्यक है।

सन् १९९५ से ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को प्राकृत भाषा दिवस के रूप में मनाये जाने की प्रेरणा देने का श्रेय आचार्यश्री को है।

प्राकृत पाठ्यक्रमों में स्वीकृत ग्रन्थों के प्रकाशन की योजना, शोधार्थी विद्वानों को एक-एक लाख रुपये के पुरस्कार की योजना आचार्यश्री की दिव्य दृष्टि का परिणाम है।

यह हर्ष का विषय है कि राजस्थान सरकार ने जयपुर की एक प्रसिद्ध कॉलोनी मालवीय नगर में 'अपभ्रंश साहित्य अकादमी' (दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित) को लगभग ३००० वर्गमीटर भूमि रियायती मूल्य पर देकर **लोक भाषा प्राकृत-अपभ्रंश** के उन्नयन का मार्ग प्रशस्त किया है।

अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर में पत्राचार के माध्यम से प्राकृत के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था २० वर्ष से चल रही है।

सम्पर्क-सूत्र : 0141-2385247

जस्टिस नगेन्द्रकुमार जैन	प्रकाशचन्द्र जैन	डॉ. कमलचन्द सोगाणी
अध्यक्ष	मंत्री	निदेशक

2 अक्टूबर 2012